

भा.कृ.अनु.प. - केन्द्रीय पटसन एवं समवर्गीय रेशा
अनुसंधान संस्थान द्वारा जारी की गई
पटसन एवं समवर्गीय रेशा उगाने वाले किसानों
को कृषि-सलाह सेवाएं

23 जुलाई - 6 अगस्त, 2022 (निर्गत सं. : 14/2022)



भा.कृ.अ.प. -केन्द्रीय पटसन एवं समवर्गीय रेशा अनुसंधान संस्थान
ICAR-Central Research Institute for Jute and Allied Fibers

An ISO 9001: 2015 Certified Institute

Barrackpore, Kolkata-700120, West Bengal

www.icar.crijaf.gov.in



**पटसन एवं समवर्गीय रेशा उगाने वाले किसानों को कृषि-सलाह सेवाएं
(23 जुलाई - 6 अगस्त, 2022)**

I. पटसन एवं समवर्गीय रेशा उगाने वाले राज्यों में अगले सप्ताह मौसम की संभावना

राज्य / कृषि जलवायु क्षेत्र / क्षेत्र	मौसम का पूर्वानुमान
पश्चिम बंगाल का गांगेय क्षेत्र (मुर्शिदाबाद, नदिया, हुगली, हावड़ा, उत्तर 24 परगना, पूर्व वर्धमान, पश्चिम वर्धमान, दक्षिण 24-परगना, बांकुरा, बीरभूम)	अगले चार दिनों (23-26 जुलाई, 2022) तक कुल 75 मि. मी. बारिश की संभावना है। अधिकतम तापमान 33-35°C और न्यूनतम तापमान लगभग 25-27°C रहने की संभावना है।
पश्चिम बंगाल के उप-हिमालयी क्षेत्र (कूचबिहार, अलीपुरद्वार, जलपाईगुड़ी, उत्तर दिनाजपुर, दक्षिण दिनाजपुर और मालदा)	अगले चार दिनों (23-26 जुलाई, 2022) तक कुल 70 मि. मी. बारिश की संभावना है। अधिकतम तापमान 32-34°C और न्यूनतम तापमान लगभग 22-24°C रहने की संभावना है।
असम : मध्य ब्रह्मपुत्र घाटी क्षेत्र (मोरीगाँव, नौगाँव)	अगले चार दिनों (23-26 जुलाई, 2022) तक कुल 25 मि. मी. बारिश की संभावना है। अधिकतम तापमान 31-33°C और न्यूनतम तापमान लगभग 22-24°C रहने की संभावना है।
असम : निचला ब्रह्मपुत्र घाटी क्षेत्र (गोआलपारा, धुबरी, कौकराझार, बंगाईगाँव, बारपेटा, नलबाड़ी, कामरूप, बक्सा, चिरांग)	अगले चार दिनों (23-26 जुलाई, 2022) तक कुल 30 मि. मी. बारिश की संभावना है। अधिकतम तापमान 30-33°C और न्यूनतम तापमान लगभग 22-24°C रहने की संभावना है।
बिहार : कृषि जलवायु क्षेत्र (उत्तरी पूर्व पूर्णिया, कटिहार, सहरसा, सुपौल, मधेपुरा, खगड़िया, अररिया, किशनगंज)	अगले चार दिनों (23-26 जुलाई, 2022) तक कुल 40 मि. मी. बारिश की संभावना है। अधिकतम तापमान 30-34°C और न्यूनतम तापमान लगभग 21-23°C रहने की संभावना है।
ओडिशा : उत्तर पूर्वी तटीय मैदान (बालेश्वर, भद्रक, जाजपुर)	अगले चार दिनों (23-26 जुलाई, 2022) तक कुल 100 मि. मी. बारिश की संभावना है। अधिकतम तापमान 32-35°C और न्यूनतम तापमान लगभग 24-26°C रहने की संभावना है।
ओडिशा : उत्तर पूर्व और दक्षिण पूर्वी तटीय मैदान क्षेत्र (केंद्रपाड़ा, खुर्दा, जगतसिंघपुर, पुरी, नयागढ़, कटक और गंजम के हिस्से)	अगले चार दिनों (23-26 जुलाई, 2022) तक कुल 70 मि. मी. बारिश की संभावना है। अधिकतम तापमान 32-35°C और न्यूनतम तापमान लगभग 24-27°C रहने की संभावना है।

स्रोत: IMD (<https://mausam.imd.gov.in/>) और www.weat4r.com

II. पटसन फसल के लिए कृषि सलाह

1. अप्रैल 26- मई 10 के मध्य बोई गई फसल : फसल अवधि : 90-105 दिन

- अगर फसल की कटाई समय (120 दिन के बाद) से की जाती है तो कृषकों को इस अवस्था में पौध संरक्षण उपाय नहीं अपनाना चाहिए । फसल की कटाई देर से करने पर कृषकों को रोमिल सूँडी के संक्रामण के प्रति सचेत रहना चाहिए ।
- इस अवस्था में जल जमाव से तना /जड़ सड़न की समस्या गंभीर हो सकती है । समुचित जल निकासी प्रबंधन करें । कमजोर तथा फसल में प्रभावी योगदान न देने वाले पौधों को हटा दें ।
- आपातकालीन स्थिति में निम्न भूमि वाले 100-110 दिन पुरानी फसल की कटाई जहां पर जल निकासी संभव नहीं है, वहाँ पर कृषकों को समान्य उपज तुलना में 70-80% उपज हेतु फसल की कटाई करनी चाहिए । अपवाद स्वरूप इससे लागत की भरपाई हो जाती है । जल जमाव की स्थिति में खेत में पौधे की पत्तियाँ का झरना संभव न होने पर जल की गहराई के हिसाब से सड़न तालाब में जाक को 2-3 तह में लगाएँ ।
- जाक के ऊपरी सतह पर केला के तना का प्रयोग न करें । जाक के ऊपर प्रत्यक्ष रूप से मिट्टी या कीचड़ के प्रयोग से बचे । .विकल्प के तौर पर सीमेंट अथवा उर्वरक के पुराने थैलों में मिट्टी भर कर जाक के ऊपर भार सामग्री के रूप में व्यवहार किया जा सकता है । सीधे तौर पर जाक के अपपर केला तना एवं मिट्टी के प्रयोग से कम गुणवत्ता वाला काला रंग की रेशा की प्राप्ति होती है ।
- त्वरित सड़न एवं उच्च गुणवत्ता वाल रेशा हेतु कृषक को क्रिजैफ़ सोना @ 4 कि. ग्रा./ बीघा का प्रयोग करना चाहिए। जाक निर्माण के समय क्रिजैफ़ सोना का प्रयोग प्रत्येक सतह में इस तरह से करना चाहिए कि पौधों के निचले हिस्से में पाउडर की मात्रा ज्यादा पड़े तथा शीर्ष वाले हिस्से में कम ।



100-110 दिन पुरानी फसल



आपातकालीन स्थिति में निम्न भूमि वाले 90-100 दिन पुरानी फसल की कटाई जहां पर जल निकासी संभव नहीं है

कटाई के बाद निकट जल स्रोत में जाक का बनाना

वर्षा के बाद, उच्च तापमान व आर्द्रता के कारण रोयेंदार कैटरपिलर (hairy caterpillar) का संक्रमण बढ़ जाता है। यह बहुत तेजी से फैलता है। संक्रमण रोकने के लिए खेत की नियमित निगरानी और गुच्छों में आये डिंबों के समूह और नवजात लार्वा को तुरंत नष्ट करें । अत्यधिक संक्रमण के मामलों में लैम्ब्डा साइह्लोथ्रिन 50 EC @ 1 मि. ली./ली. या प्रोफेनोफास 50 EC @ 2 मि. ली./ली. का छिड़काव

2. पटसन की बुवाई अप्रैल 11-25 के मध्य होने पर : फसल अवधि 105-120 दिन

- अगर फसल की कटाई समय (120 दिन के बाद) से की जाती है तो कृषकों को इस अवस्था में पौध संरक्षण उपाय नहीं अपनाना चाहिए । फसल की कटाई देर से करने पर कृषकों को रोमिल सूँडी के संक्रमण के प्रति सचेत रहना चाहिए ।
- इस अवस्था में जल जमाव से तना /जड़ सड़न की समस्या गंभीर हो सकती है । समुचित जल निकासी प्रबंधन करें । कमजोर तथा फसल में प्रभावी योगदान न देने वाले पौधों को हटा दें ।
- आपातकालीन स्थिति में निम्न भूमि वाले 100-110 दिन पुरानी फसल की कटाई जहां पर जल निकासी संभव नहीं है, वहाँ पर कृषकों को सामान्य उपज तुलना में 70-80% उपज हेतु फसल की कटाई करनी चाहिए । अपवाद स्वरूप इससे लागत की भरपाई हो जाती है । जल जमाव की स्थिति में खेत में पौधे की पत्तियाँ का झरना संभव न होने पर जल की गहराई के हिसाब से सड़न तालाब में जाक को 2-3 तह में लगाएँ ।
- फसल के परिपक्व होने पर कृषक 120 दिनों के बाद फसल की कटाई कर सकते हैं। कटाई के बाद पौधों को खड़ी अवस्था में ही 3-4 दिनों के लिए पत्तियों को झड़ने के लिए छोड़ दिया जाता है । इससे पौधों द्वारा विकास अवस्था के समय मिट्टी से लिए गए पोषक तत्व वापस मिट्टी में मिल जाते हैं । एक समान सड़न के लिए 1.5 मी. से कम लंबाई के पौधों को हटा कर अलग कर देना चाहिए ।
- जाक के ऊपरी सतह पर केला के तना का प्रयोग न करें । जाक के ऊपर प्रत्यक्ष रूप से मिट्टी या कीचड़ के प्रयोग से बचे । .विकल्प के तौर पर सीमेंट अथवा उर्वरक के पुराने थैलों में मिट्टी भर कर जाक के ऊपर भार सामग्री के रूप में व्यवहार किया जा सकता है । सीधे तौर पर जाक के अपपर केला तना एवं मिट्टी के प्रयोग से कम गुणवत्ता वाला काला रंग की रेशा की प्राप्ति होती है ।
- त्वरित सड़न एवं उच्च गुणवत्ता वाल रेशा हेतु कृषक को क्रिजैफ़ सोना @ 4 कि. ग्रा./ बीघा का प्रयोग करना चाहिए। जाक निर्माण के समय क्रिजैफ़ सोना का प्रयोग प्रत्येक तह में इस तरह से करना चाहिए कि पौधों के निचले हिस्से में पाउडर की मात्रा ज्यादा पड़े तथा शीर्ष वाले हिस्से में कम ।



1. 120 दिन के पौधों की कटाई



2. पटसन के बंडलों का पत्तों झड़ने के लिए खेत में छोड़ना



3. जाक निर्माण



4. बेहतर सड़न के साथ-साथ जल्द सड़न हेतु जाक के ऊपर क्रिजैफ़ सोना का प्रयोग



5. जाक को डुबाने हेतु भार सामग्री के रूप में सीमेंट के बस्तों (बालू, पत्थर, मिट्टी) में का प्रयोग



6. वैकल्पिक भार के रूप में जाक को डुबाने हेतु के इस ऊपर प्लास्टिक थैलों में पानी भर कर रखना

3. समय से बोई गई पटसन (मार्च 25- अप्रैल 10): फसल अवधि 120-135 दिन

- कटाई के बाद पटसन के सुविधाजनक बंडल बना कर खेत में 3-4 दिनों के लिए पतियों को झड़ने छोड़ दिया जाता है, इसके सड़ने से मिट्टी में जैविक तत्वों के साथ-साथ कुछ पौध पोषक तत्वों की भी पूर्ति हो जाती है। इसके बाद इन बंडलों को नजदीक के जल स्रोतों में जाक बनाने के लिए लाया जाता है।
- जाक के ऊपरी सतह पर केला के तना का प्रयोग न करें। जाक के ऊपर प्रत्यक्ष रूप से मिट्टी या कीचड़ के प्रयोग से बचे। विकल्प के तौर पर सीमेंट अथवा उर्वरक के पुराने थैलों में मिट्टी भर कर जाक के ऊपर भार सामग्री के रूप में व्यवहार किया जा सकता है। कृषक रेशा गुणवत्ता सुधार हेतु जाक के ऊपर जलकुंभी (उपलब्ध होने पर) का प्रयोग कर सकते हैं।
- विकल्प के तौर पर पुनः उपयोग में आने वाले प्लास्टिक के थैलों में जल भर कर भार सामग्री के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।
- त्वरित सड़न एवं उच्च गुणवत्ता वाल रेशा हेतु कृषक को क्रिजैफ सोना @ 4 कि. ग्रा./ बीघा का प्रयोग करना चाहिए। जाक निर्माण के समय क्रिजैफ सोना का प्रयोग प्रत्येक तह में इस तरह से करना चाहिए कि पौधों के निचले हिस्से में पाउडर की मात्रा ज्यादा पड़े तथा शीर्ष वाले हिस्से में कम। रेशा का अत्यधिक सड़न से बचाव हेतु कृषकों को क्रिजैफ सोना व्यवहृत जाक की जाँच 8-10 दिनों के बाद करने की सलाह दी जाती है।

रेशा निष्कर्षण एवं रेशा को सुखाना

- उन अवस्था में पटसन सड़न पूरी हो गई होगी जहां पर जाक 10-20 दिन पहले बनाए गए थे। सड़न पूर्ण होने पर रेशा निष्कर्षण करें एवं इसे धूप में सुखायें।



120 दिन के पौधों की कटाई के बाद पटसन के बंडलों को 3-4 दिनों के लिए पत्ती झड़ने के लिए खेत में छोड़ना



कटाई के बाद निकट जल स्रोत में जाक का बनाना एवं क्रिजैफ सोना का प्रयोग



रेशा गुणवत्ता सुधार हेतु जाक को जलकुंभी (उपलब्ध होने पर) से ढकना



जाक को जल में डुबाने हेतु भार सामग्री (बालू/पत्थर /मिट्टी) को पुराने सीमेंट के बस्तों में रखना



वैकल्पिक भार के रूप में जाक के ऊपर प्लास्टिक थैलों में पानी भर कर रखना



उचित सड़न हेतु जाक को जल में डूबे रहने को सुनिश्चित करें



1. रेशा निष्कर्षण एवं धुलाई 2. धूप में रेशा को सुखाना 3. रेशा के बंडल

III. समवर्गीय रेशा फसल के लिए कृषि सलाह

अ) सनई



1. जिन्होंने फसल मई 11-25 के मध्य बोई है : (फसल अवधि 70-85 दिन)

- इस समय अधिकतम तथा न्यूनतम तापमान क्रमशः 31-34°C एवं 26-27°C रहने की संभावना है , जिससे अगले सप्ताह भारी वर्षा हो सकती है |
- अत्यधिक वर्षा की स्थिति में जल जमाव होने पर फसल में वेस्कुलर विल्ट की समस्या बढ़ सकती है | फसल को जल जमाव के प्रतिकूल प्रभाव से बचाने हेतु ढलान की दिशा में अविलंब ही नालियाँ बना कर अतिरिक्त जल निकासी का प्रबंध करना चाहिए |
- किसानों को घने पौधों के साथ-साथ गरम मौसम की दशा में रोमिल सूँड़ी संक्रमण के प्रति सतर्क रहने की सलाह दी जाती है | इस स्थिति में संक्रमण के तीव्रता के हिसाब से लैम्ब्डा साइहलोथिन 5EC @ 1 मि. ली./ली. या इंडोक्साकार्ब 14.5 SC @ 1 मि. ली./ली. का छिड़काव करना चाहिए |



80-85 दिन पुरानी फसल



खेत से जल निकालना

2. 26 अप्रैल- 10 मई के मध्य बोई गई फसल (फसल अवधि : 85-100 दिन)

- फसल को 90-100 दिनों के बाद काटा जा सकता है | फसल को हँसिये के मदद से काटा जाता है और पौधों के सड़न एवं धुलाई के सुविधा हेतु 15-20 से. मी. व्यास वाले बंडलों में बांधा जाता है | पौधे के शीर्ष कटे हुये हिस्से को मवेशी के चारा या मिट्टी में हरी खाद के रूप में मिला दिया जाता है |
- बंडलों को सड़न तालाब में ले जाया जाता है जिसे क्षैतिज दशा में पास पास रखते हुये एक सुविधाजनक प्लेटफार्म का रूप दिया जाता है, जिसे बाँस या पत्थर या लकड़ी के लट्टों से जल की स्तहस से करीब 20-25 से. मी. नीचे दबाया जाता है | तापमान के हिसाब से सम्पूर्ण सड़न प्रक्रिया 3-5 दिनों में पूरी हो जाती है | सड़न प्रक्रिया के पूर्ण होने की जांच हेतु सनई के तना से छाल को अलग कर देखा जाता है |



90-100 दिन पुरानी फसल की कटाई



कटे फसल का बंडल बनाना



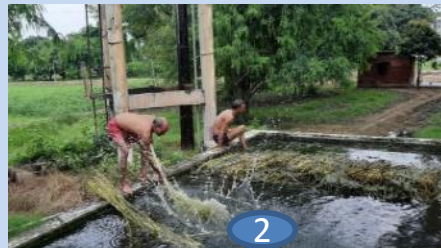
नजदीक के जल स्रोत में जाक बनाना

3. वैसे कृषक जिन्होंने मध्य अप्रैल में बुवाई पूरी की है (फसल अवधि: 100-115 दिन)

- कृषकों को सड़न प्रक्रिया पूरी होने की पुष्टीकरण की सलाह दी जाती है | सड़न प्रक्रिया पूरी हो जाने पर सनई के बंडलों को 3-4 बार जल में झटका दिया जाता है अतिरिक्त लिग्निन निकल जाय तथा बंडल को जल में आगे-पीछे घुमाया जाता है | धुले हुये बंडलों को ऊर्ध्वाधर दिशा में जल को निकालने के लिए रखा जाता है |
- धुले हुये बंडलों को धूप में सूखने के लिए रखा जाता है | प्रत्येक पौधे के जड़ वाले हिस्से से शीर्ष तक रेशा को हाथ से अलग किया जाता है | इन अलग किए हुये रेशा को पुनः धूप में सुखाने के पश्चात रेशा को बिक्री के लिए उमेठ कर रखा जाता है |



1



2



3



4



5

1, 2, 3. भीगे हुये रेशा की धुलाई 4. रेशा निष्कर्षण 5. रेशा को सूखाना

ब) मेस्ता



केनाफ



रोजल

1. जिन्होंने जून के मध्य में मेस्ता की बुवाई की है : (फसल अवधि 40-55 दिन)

- गर्म एवं आद्र दशा में जड़ एवं तना गलन तेजी से फैलता है। जल जमा न होने दें तथा इसके निकासी का प्रबंध करें। पौधे के निचले हिस्से में कापर ओक्सिक्लोराइड 50% @ 4-5 ग्रा./ली. का छिड़काव करें।
- इसी तरह फोमा ब्लाइट जो पत्ती के किनारे से बढ़ते हुये अंदर की ओर बढ़ते हुये जाता है। आद्र दशा में संक्रमण तेजी से फैलता है तथा पौधा पत्ती विहीन हो जाता है। सुरक्षा के तौर पर (रोग का स्तर > 5%) मेंकोजेब @ 2 ग्रा./ली. या कापर ओक्सिक्लोराइड 50% @ 4-5 ग्रा./ली. का प्रयोग करना चाहिए।
- शुष्क अवधि अधिक दिनों तक बनी रहने पर मिली बग का संक्रमण हो सकता है। निगरानी के दौरान मिली बग का कॉलोनी अधिक संख्या में दिखाई देने पर इसे नष्ट करें तथा प्रोफेनोफोस 50 EC @ 2 मि. ली./ली. का पर्णय छिड़काव करें।



60 दिन पुरानी फसल



मेस्ता की पत्ती में फोमा ब्लाइट

2. मेस्ता की बुवाई जून माह के प्रथम सप्ताह में करने पर (फसल अवधि 45-60 दिन)

- जल जमा न होने दें तथा इसके निकासी का प्रबंध करें ताकि पौधा जैविक एवं अजैविक दबावों से मुक्त रहे। जल जमाव की दशा में अधिकतर जड़ एवं तना गलन तेजी से फैलता है। पौधे के निचले हिस्से में कापर ओक्सिक्लोराइड 50% @ 4-5 ग्रा./ली. का छिड़काव करें।
- इसी तरह फोमा ब्लाइट जो पत्ती के किनारे से बढ़ते हुये अंदर की ओर बढ़ते हुये जाता है। आद्र दशा में संक्रमण तेजी से फैलता है तथा पौधा पत्ती विहीन हो जाता है। सुरक्षा के तौर पर (रोग का स्तर > 5%) मेंकोजेब @ 2 ग्रा./ली. या कापर ओक्सिक्लोराइड 50% @ 4-5 ग्रा./ली. का प्रयोग करना चाहिए।



60-75 दिन पुरानी फसल



जड़ एवं तना गलन



मेस्ता पत्ती का फोमा ब्लाइट

3. मध्य मई में बोई गई मेस्ता की फसल (फसल अवधि 60-75 दिन)

- जल जमा न होने दें तथा इसके निकासी का प्रबंध करें ताकि पौधा जैविक एवं अजैविक दबावों से मुक्त रहे। जल जमाव की दशा में अधिकतर जड़ एवं तना गलन तेजी से फैलता है। पौधे के निचले हिस्से में कापर ओक्सिक्लोराइड 50% @ 4-5 ग्रा./ली. का छिड़काव करें।
- इसी तरह फोमा ब्लाइट जो पत्ती के किनारे से बढ़ते हुये अंदर की ओर बढ़ते हुये जाता है। आठ्र दशा में संक्रमण तेजी से फैलता है तथा पौधा पत्ती विहीन हो जाता है। सुरक्षा के तौर पर (रोग का स्तर > 5%) मैकॉजेब @ 2 ग्रा./ली. या कापर ओक्सिक्लोराइड 50% @ 4-5 ग्रा./ली. का प्रयोग करना चाहिए।
- कुछ मेस्ता उत्पादक क्षेत्रों में सफेद मक्खी द्वारा मेस्ता येलो वेन मोजाईक रोग का संचरण होता है। इमिडाक्लोप्रिड 17.8 SL @ 0.5-1.0 मि.ली./ली. का पर्णाय छिड़काव से रोग वाहक के संख्या में कमी से रोग के प्रसार में कमी आती है।



60-70 दिन पुरानी फसल



जड़ एवं तना गलन



मेस्ता की पत्ती में फोमा ब्लाइट



मेस्ता येलो वेन मोजाईक ग्रसित पौधा

स) सीसल

सीसल (*Agave sisalana*) एक मरुदभिद (जेरोफाइटिक) अर्ध-बहुवर्षीय, रेशा (पत्ती रेशा) फसल है। सीसल रेशा का उपयोग आमतौर पर जहाजरानी (शिपिंग) उद्योग में छोटे शिल्प, लैशिंग और कार्गो को संभालने के लिए किया जाता है। वर्तमान में मुख्य सीसल उत्पादक और निर्यातक ब्राजील है और मुख्य आयातक चीन है। भारत में, सीसल मुख्य रूप से आंध्र प्रदेश, बिहार, उड़ीसा, कर्नाटक, महाराष्ट्र और पश्चिम बंगाल के शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में उगाया जाता है। उचित प्रबंधन की कमी के कारण हमारे देश में सीसल की पैदावार बहुत कम है। सीसल की खेती 7770 हेक्टेयर क्षेत्रफल में होती है, जिसमें से 4816 हेक्टेयर को मिट्टी संरक्षण के उद्देश्य से उगाया जाता है। भारतीय जलवायु के लिए उपयुक्त सीसल है, जिसके लिए कम पानी और रखरखाव की जरूरत होती है, ग्रामीण भारत के सतत विकास के लिए एक उपयुक्त फसल है। सीसल एक सी.ए.एम. (CAM) फसल है जिसे 60-125 सेमी वर्षा के साथ 40-45°C में भी सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है। सीसल और इसकी संबद्ध गतिविधियों की खेती से मानव दिवस सृजन (113 मानव-दिन / हेक्टेयर) और मूल्य संवर्धन से कुटीर उद्योगों द्वारा आदिवासी / स्थानीय किसानों के रोजगार के अवसरों और आजीविका में वृद्धि होगी। इसके अलावा, सीसल पानी के व्यर्थ बहाव (रनऑफ) को 34.6%, मिट्टी क्षरण को 61.9% तक कम करने और मिट्टी की नमी को संरक्षित करने में सक्षम है।

- **बुलबिल्स का संग्रहण:** सीसल पौधा की बढ़वार पोल (पुष्पण स्टॉक) निकलने पर समाप्त हो जाती है। प्रत्येक पोल पर 4-7 छोटे पत्तियों वाले 200-500 बुलबिल्स लगे होते हैं। इसे प्राथमिक नर्सरी में रोपण सामग्री के रूप में एकत्र किया जाता है।
- **प्राथमिक नर्सरी की तैयारी:** प्राथमिक नर्सरी में गहन देख-रेख के अंतर्गत नए बुलबिल्स से सकर प्राप्त किए जाते हैं। संग्रहित बुलबिल्स को 1 मी. चौड़ाई तथा सुविधानुसार लम्बाई के समतल और उठे हुए क्यारियों में 10 x 7 से.मी. की दूरी पर लगाना चाहिए। इसमें जैविक तत्व के अलावा N:P:K @ 30:15:30 कि. ग्रा./ है. का प्रयोग करना चाहिए। शुरुआती अवस्था में बुलबिल्स खरपतवार प्रतिस्पर्धा, जल की कमी एवं अधिकता के प्रति संवेदनशील होते हैं अतः नर्सरी को खरपतवार मुक्त रखने के साथ-साथ पर्याप्त सिंचाई के साथ जल निकासी की सुविधा होनी चाहिए।
- **द्वितीयक नर्सरी का रख रखाव :** नर्सरी खरपतवार मुक्त होने के साथ-साथ सिंचाई एवं जल निकासी सुविधायुक्त होना चाहिए। स्वस्थ सकर की प्राप्ति के लिए निवारक के तौर पर रोग से बचाव हेतु मेकोजेब 72 % WP(0.25%) + मेटाक्सिल 25% का छिड़काव करना चाहिए। सीसल कम्पोस्ट का प्रयोग करने से मिट्टी में पोषक तत्वों की आपूर्ति होती है तथा साथ ही साथ खरपतवार के प्रकोप में कमी आती है। उचित ढंग से देख रेख करने पर प्रति है. करीब 80,000 बुलबिल्स से कम से कम 72,000-76,000 सकर की प्राप्ति होती है। द्वितीयक नर्सरी में करीब 5-10% बुलबिल्स नष्ट हो जाते हैं। पौधों के उचित बढ़वार हेतु मानसून के शुरुआत बाद नाइट्रोजन उर्वरक का टॉप ड्रेसिंग करना चाहिए। हाइब्रिड सीसल के लिए भी यही प्रक्रिया अपनाई जानी चाहिए।
- **मुख्य भूमि में सकर का रख रखाव :** सामान्यतः प्राथमिक नर्सरी में बुलबिल्स लगाया जाता है, फिर उसे माध्यमिक नर्सरी में उगा कर रोपण सामग्री के रूप में सकर को तैयार किया जाता है। इसके अलावा पुराने प्लैंटेशन से भी सीधे सकर प्राप्त होता है। इस सकर को फिर मुख्य भूमि में लगाया जाता है। प्रति वर्ष मुख्य प्लैंटेशन से 2-3 सकर प्राप्त होता है, जिसे सीधे तौर पर मुख्य भूमि में लगाया जा सकता है। रोपण से पहले सकर के पुराने क्षतिग्रस्त पत्तियों एवं जड़ को छांट कर हटा दिया जाता है। छाँटाई के समय ध्यान देना चाहिए कि सकर का शीर्ष वाला हिस्सा को कोई नुकसान न पहुंचे। मुख्य भूमि में लगे सकर को खरपतवार मुक्त रखना चाहिए। पौध संरक्षण का उपाय भी अपनाना चाहिए ताकि वर्षा ऋतु आरंभ होने के बाद स्वस्थ सकर की प्राप्ति हो।



अ



ब



स



द

पत्तियों की कटाई(अ), रेशा निष्कर्षण (ब), प्राथमिक नर्सरी में अन्तः सस्य क्रियाएं एवं (स) कॉपर ऑक्सीक्लोराइड @ 2-3 ग्रा. / ली. का छिड़काव (द)

नये सीसल प्लैंटेशन का रखरखाव:

- एक से दो वर्ष पुराने सीसल के प्लैंटेशन में निराई का उद्देश्य पानी और पोषक तत्वों का बेहतर सदुपयोग करना होता है। सीसल में जैब्रा या अलटेरनेरिया लीफ स्पॉट रोग प्रकट होने पर कौपर ऑक्सीक्लोराइड @ 3.0 ग्रा./ ली. या मेंकोजेब 64 % + मेटाक्सिल 8 % @ 2.5 ग्रा. / ली. पानी के साथ छिड़काव करना चाहिए। बेहतर बढवार के लिए रोपाई के तुरंत बाद सीसल खाद @ 2 टन/ हे. और एन.पी.के 60:30:30 कि. ग्रा./हे. प्रयोग करना चाहिए। प्लैंटेशन के पहले वर्ष में कम से कम उर्वरक को सीसल के पाधों के चारो तरफ गोलाई में डालना चाहिए।

सीसल का मुख्य भूमि में रोपण:

- जिन किसानों ने अब तक मुख्य भूमि की तैयारी नहीं की है, उन्हें बिना विलम्ब के सीसल रोपण के लिए बेहतर जल निकास वाले भूमि का चयन करना चाहिए जिसमें कम से कम 15 से. मी. तक मिट्टी हो। जब सीसल का रोपण ढालुवा जमीन में करना हो तो पूरे जमीन की खुदाई आवश्यक नहीं है। मुख्य भूमि में क्षेत्र निर्धारण, झाड़ी एवं खरपतवार के सफाई के बाद एक घन फूट के गड्डे को 3.5 मी.+ 1 मी. X 1 मी. की दूरी पर बनाना ताकि सीसल की रोपाई द्विपंक्तिय विधि से हो सके। जिसके लिए करीब 4,500 सकर/ हे. की आवश्यकता होती है। प्रतिकूल परिस्थिति में 3.0 मी. + 1 मी. X 1 मी. की दूरी पर रोपाई हेतु करीब 5,000 सकर/ हे. की आवश्यकता होती है।
- गड्डे को मिट्टी और सीसल खाद या खेत सड़ित खाद से भरना चाहिए ताकि मिट्टी छिद्रयुक्त हो जाय। अम्लीय मिट्टी में कली चूना @ 2.5 टन/ हे. प्रयोग करना चाहिए। गड्डे में इतनी मिट्टी भरनी चाहिए की वह सतह से 1-2 इंच ऊपर रहे जिससे सकर को जमने में आसानी हो।
- माध्यमिक नर्सरी में उगाये गये सकर या मुख्य भूमि से प्राप्त सकर के पुराने पतियों को छाँटने एवं इसके जड़ को मेंकोजेब 64 % + मेटाक्सिल 8 % @ 2.5 ग्रा./ली. पानी में 20 मिनट तक उपचारित करने के बाद रोपना चाहिए। एक नकीले लकड़ी से गड्डे में छेद करके सकर को बीचों बीच रोपना चाहिए। सकर की रोपाई इस तरह होनी चाहिए, जिससे कि जड़ का ऊपरी भाग सतह पर रहे।
- सकर की लंबाई लगभग 30 से.मी., वजन 250 ग्राम और 5-6 पतियों वाला होना चाहिए। सकर स्वस्थ एवं रोगमुक्त होना चाहिए।
- सकर की बेहतर वृद्धि के लिए खेत तैयार करते वक्त सीसल खाद या सड़ा हुआ खाद @ 5 टन/ हे. और एन.पी. के. 60 : 30: 30 कि.ग्रा. /हे. प्रयोग करना चाहिए। नत्रजन का प्रयोग दो बराबर हिस्सों में करना चाहिए - पहला मौनसून से पहले और दूसरा मौनसून के बाद।
- मृदा संरक्षण हेतु सकर की रोपाई संग्रहण के 45 दिनों के अन्दर कंट्र के समानान्तर तथा ढलान के विपरीत करना चाहिए। सकर को ढेर में रखने के बजाय छाया के नीचे एक परत में रखना बेहतर होता है। वांछित पौध संख्या तथा पौधों के बीच अंतराल को भरने हेतु कम से कम 100 सकर/हे. सुरक्षित रखना चाहिए।
- एक समान पौध संख्या के लिए मुख्य भूमि से प्राप्त सीसल सकर की तुलना में माध्यमिक नर्सरी वाले सीसल सकर को प्राथमिकता देना चाहिए।

सीसल पत्ते की कटाई :

- प्लांटेशन के तीन वर्षों के बाद पतियों की पहली कटाई में 16 पतियों को छोड़ कर काटना चाहिए जबकि बाद की कटाई में केवल 12 पतियों को ही छोड़ना चाहिए। जिन कृषकों ने पतियों की कटाई अब तक नहीं की है उन्हें इसे दोपहर के समय करना चाहिए और निष्कर्षण भी उसी दिन तुरंत पूरा किया जाना चाहिए। पतियों की कटाई के बाद रोग के संक्रमण को रोकने के लिए कौपर ऑक्सीक्लोराइड @ 2-3 ग्राम / लीटर का छिड़काव किया जाना चाहिए। निष्कर्षित रेशा को धुलाई के बाद सूखा कर गट्टरों में बांध कर संग्रह करना चाहिए।

अतिरिक्त आमदनी के लिए सीसल प्लांटेशन में अंत: खेती:

- सीसल प्लांटेशन में अंत: खेती के रूप में लेमन ग्रास उत्पादन से मृदा एवं जल संरक्षण से करीब रु. 65000/हे. की प्राप्ति होती है। इसी तरह अंत: खेती के रूप में कुलथी उत्पादन से मृदा उर्वरता में वृद्धि, खर पतवार के समस्या में कमी के साथ-साथ करीब रु. 36,000/हे. की प्राप्ति होती है। अतिरिक्त आमदनी हेतु अल्प अवधि वाली मूंग की खेती से मृदा एवं जल संरक्षण के साथ-साथ मृदा उर्वरता में वृद्धि से करीब रु. 38,000/हे. की प्राप्ति होती है।



1



2



3

अंत: खेती 1. लेमन ग्रास 2. कुलथी 3. मूंग

सीसल आधारित समेकित कृषि पद्धति

जनजाति एवं सूखा ग्रस्त क्षेत्रों में रोजगार सृजन, कृषि आय बढ़ाने तथा टिकाऊ खेती हेतु सीसल प्लैंटेशन में समेकित कृषि पद्धति को सफलतापूर्वक अपनाया जा सकता है। प्रक्षेत्र के विभिन्न उद्यमों के एकीकरण तथा फसल अवशेष के पुनर्चक्रण द्वारा उपलब्ध संसाधनों का दक्षतापूर्वक इस्तेमाल होने से पर्याप्त आमदनी की संभावना रहती है। सीसल आधारित फसल पद्धति में विभिन्न पशु एवं फसल घटकों का समाकलन मुख्य फसल सीसल के साथ किया जा सकता है। इसके निम्न लाभ हैं :

1. कुक्कुट पालन हेतु उन्नत प्रजाति वनराजा, रेड रोस्टर तथा कड़कनाथ के चयन (संख्या 100) द्वारा शुद्ध लाभ 8,000 -10,000 रु./वर्ष अर्जित की सकती है।
2. एक कृषक दो गाय से डेयरी का कार्य शुरुआत कर शुद्ध लाभ 25,000 रु./वर्ष प्राप्त कर सकता है। सीसल के द्विपंक्तीय स्थान के बीच उगाये गए भिन्न चारा फसलों के अलावा अन्य फसल अवशेष को गायों के खाद्य सामग्री के रूप में इस्तेमाल हो सकता है।
3. बकरी पालन (संख्या 10) से अतिरिक्त आमदनी 12,000 -15,000 रु./वर्ष प्राप्त की जा सकती है।
4. सीसल के निचले हिस्से का रेशा (toe fibre) तथा सीसल फसलों के बीच स्थान में उत्पादित अनोरोबिक धान के पुआल से मशरूम उत्पादन का कार्य 6 क्यारियों से शुरू कर शुद्ध लाभ 12,000 रुपया/वर्ष प्राप्त किया जा सकता है।
5. वर्मिकम्पोस्टिंग की शुरुआत सीसल अवशेष, सीसल फसलों के बीच स्थान में उत्पादित अन्य फसल तथा मशरूम के अवशेष के उपयोग द्वारा शुद्ध लाभ 14,000 रु./वर्ष के अलावा उर्वरक पर होने वाले खर्च में बचत के साथ मृदा स्वस्थ्य में सुधार होता है।
6. सीसल कि खेती ढलाऊँ तथा ऊबड़- खाबड़ भूमि की जाती है जहाँ पर अक्सर सिंचाई की अनुपलब्धता रहती है। इस स्थिति में बेहतर प्रबंधन द्वारा कम तथा असमान वर्षा जल वितरण का संग्रहण किया जा सकता है। एक सीसल उत्पादक संचित वर्षा जल को विभिन्न कृषि कार्यों के लिए उपयोग में ला सकता है। जल संग्रहण संरचना के निर्माण हेतु भूमि के न्यूनतम बिन्दु वाले स्थान का चयन करना चाहिए। एक हेक्टेयर की क्षेत्रफल वाले भूमि के लिए इसके दसवें हिस्से (0.1 है.) में बनी संरचना (30 मी. X 30 मी. X 1.8 मी. तथा 1.5 मी. चौड़ी मेड़) पर्याप्त होती है। संग्रहित वर्षा जल को निम्न कार्यों हेतु प्रयोग में लाया जा सकता है :
 - ❖ अंतर्वर्ती फसलों के क्रांतिक अवस्था के अलावा मुख्य फसल सीसल में सिंचाई
 - ❖ निष्कर्षित सीसल रेशा के धुलाई हेतु
 - ❖ संरचना के मेड़ पर फलदार पौधे जैसे पपीता, नारियल,केला, सहजन, मौसमी सब्जी उत्पादन से 15,000-20,000 रु./वर्ष की अतिरिक्त आमदनी
 - ❖ मिश्रित मत्स्य पालन जैसे कतला, रोहू, मृगल द्वारा 10,000-12,000 रु./वर्ष की अतिरिक्त आमदनी
 - ❖ बत्तख पालन (100 संख्या) द्वारा 8,000 रु./वर्ष की अतिरिक्त आमदनी



बामड़ा, ओड़िशा में सीसल आधारित समेकित कृषि पद्धति

द) रेमी



- मौसम के पूर्वानुमान के अनुसार असम (बारपेटा जिला) में मध्यम से तीव्र गरज के साथ बारिश की संभावना है, रेमी जल जमाव के प्रति संवेदनशील होती है, अतः अधिक वर्षा की दशा में खेत से जल निकासी की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए।
- रेमी फसल की समय से कटाई सबसे महत्वपूर्ण क्रिया है, जिसे प्रत्येक 45-60 दिनों के बाद करना चाहिए। इस अवस्था में तना हरा से गहरे भूरे रंग के हो जाते हैं अधिक देर करने से निम्न गुणवत्ता वाले रेशा की प्राप्ति होती है। ऐसी अवस्था से बचने के लिए कृषक को सचेत रहना चाहिए।
- पुराने प्लांटेशन में एक समान पौध संख्या के लिए स्टेज बैंक ऑपरेशन के बाद NPK 30:15:15 प्रयोग की सिफारिश की जाती है।
- नए प्लांटेशन में पौध संख्या समान न होने पर गैप फिलिंग करनी चाहिए।
- घास के समान सभी प्रकार के खरपतवार प्रबंधन हेतु क्विजालोफोप ईथाइल 5% EC @ 40 ग्रा. ए.आई./है. के छिड़काव से खरपतवार की समस्या में व्यापक कमी आती है। छिड़काव से पहले खासकर घास जैसे खरपतवार की तीव्रता का ध्यान रखना चाहिए।
- फसल में इंडियन रेड एडमिरल कैटरपिलर, हेरी कैटरपिलर, लेडी बर्ड बीटल, दीमक, लीफ बीटल एवं लीफ रोलर कीट के नुकसान के अनुसार क्लोरपाइरिफास 0.04% छिड़काव की सलाह दी जाती है।
- फसल में श्रकोस्पोरा लीफ स्पॉट, स्कलेरोशियम राट, अन्थ्रोक्नोज लीफ स्पॉट, डैमपिंग ऑफ एवं येलो मोजाईक रोग के आक्रमण के अनुसार मेंकोजेब @2.5 मि. ली./ ली. या प्रोपिकोनजोल @ 1.0 मि. ली./ ली. छिड़काव की सलाह दी जाती है।



रेमी राइज़ोम की रोपाई

रेमी की नई प्लांटेशन

रेमी फसल की कटाई



कटाई पश्चात पत्तियों को अलग करना

रेमी रेशा निष्कर्षण

रेमी (गोंदरहित) रेशा की सुखाई

इन-सीटू रेटिंग और सतत इको-फार्मिंग के लिए जल संचयन

- ❖ पटसन और मेस्ता उत्पादकों को अनियमित वर्षा वितरण, सड़न के लिए सामुदायिक तालाब की अनुपलब्धता, प्रति व्यक्ति जल संसाधन में हास, बढ़ती मजदूरी, बढ़ती लागत, पटसन सड़ाने के समय नदी, तालाब, पोखर इत्यादि में जल कम होना या सूखा होना आदि इन सब कारणों से प्राप्त रेशा की गुणवत्ता अंतर्राष्ट्रीय स्तर की नहीं होती है।
- ❖ इन सारी समस्याओं से निजात पाने के लिए,, किसान खेती के मूल स्थान पर ही तालाब आधारित खेती प्रणाली को अपनाकर पटसन एवं मेस्ता खेती को लाभदायक बना सकते हैं। जैसा कि हम जानते हैं, पटसन उगाने वाले राज्यों में उच्च वार्षिक वर्षा (1200-2000 मि.मी.) होती है, परंतु इसका 30-40 % ऐसे ही बेकार बह जाता है। इस पानी को अगर खेत के निचले हिस्से के तरफ एक तालाब बनाकर जमा किया जाय तो इसका उपयोग पटसन / मेस्ता सड़ाने के लिए किया जा सकता है।

एक एकड़ पटसन खेत के लिए तालाब का डिजाइन और सड़न प्रक्रिया:

- ❖ तालाब का आकार 40 फीट x 30 फीट x 5 फीट होना चाहिए जो कि एक बार में आधे एकड़ के पटसन को सड़ाने के लिए पर्याप्त होता है। इस तालाब में एक एकड़ पटसन को दो बार में बारी- बारी सड़ाया जा सकता है। इस तालाब के मेड़/ बाँध काफी चौड़ा (1.5 -1.8 मी.) होना चाहिए ताकि उस पर पपीता, केला, सब्जी इत्यादि भी लगाया जा सके। इस तरह कृषित क्षेत्र खुदे हुये एवं मेड़/ बाँध समेत 180 वर्ग मी. का होता है। अगर किसान के पास अधिक जमीन हो तो तालाब का आकार 50 फीट x 30 फीट x 5 फीट तक किया जा सकता है।
- ❖ तालाब को LDPE एग्री-फिल्म (150-300 माइक्रोन) से स्तर करना चाहिए ताकि रिसाव एवं बहाव द्वारा जल की हानि कम से कम हो।
- ❖ एक बार में तीन जाक बना कर रखना चाहिए और प्रत्येक जाक में तीन स्तर होने चाहिए। जमीन और जाक में कम से कम 20-30 सें.मी. का अन्तर होना चाहिए और जाक के ऊपर भी 20-30 सें.मी. पानी होना चाहिए।

खेती के मूल स्थान पर सड़न तालाब के लाभ:

- ❖ कटे हुए पटसन बंडलों को एक जगह से दूसरी जगह ले जाने में 4000-5,000 रुपया/एकड़ की बचत होती है।
- ❖ क्राइजैफ सोना (14 कि. ग्रा./ एकड़) के प्रयोग से 12-15 दिनों में ही पटसन सड़ जाता है जबकि पारंपरिक विधि में 18-21 दिन लगता है। दूसरी बार में पाउडर की आधी मात्रा की जरूरत होती है, अर्थात यहाँ भी 400 रुपया की बचत।
- ❖ सड़न के समय, धीरे बहते हुए बरसाती पानी के कारण रेशा की गुणवत्ता में 1-2 ग्रेड की बढ़ोतरी होती है।

पटसन एवं मेस्ता सड़न के अलावा इस पानी का बहु-उपयोग :

1. इस तालाब के मेड़/ बाँध पर फलदार पौधों - पपीता, केला, सामयिक सब्जियों की खेती से 10,000-12,000 रुपया प्रति तालाब तक अर्जन किया जा सकता है।
2. इस तालाब में हवा में साँस लेने वाली मछली(तेलपिया, सिंघी, मागुर), का पालन कर 50-60 कि.ग्रा. प्रति तालाब तक मछली का उत्पादन संभव है।
3. इस प्रणाली में मधुमक्खी पालन (जिससे करीब 7,000 रुपया तक की अतिरिक्त आमदनी) भी किया जा सकता है; जिसके कारण परागण में भी बढ़ोतरी होती है।
4. इसके साथ मशरूम और वर्मिकॉपोस्टिंग भी किया जा सकता है।
5. इस तालाब में 50 बतखों के पालन से 5,000 रुपया की अतिरिक्त आमदनी होगी।
6. पटसन सड़न के बाद बचे हुए पानी का उपयोग अन्य फसलों में अतिरिक्त सिंचाई के रूप में किया जा सकता है और ऐसा करके 4000 रुपया/ एकड़ की अतिरिक्त आय होगी।

इस तरह से पटसन खेत में एक स्थायी तालाब बनाकर करीब 1,000 -1,200 रुपया के पटसन का आर्थिक नुकसान कर मिश्रित खेती द्वारा 30,000 रुपया की अतिरिक्त आमदनी के अलावा कटे हुए पटसन बंडलों को एक जगह से दूसरी जगह ले जाने में होने वाले करीब 4,000-5,000 रुपया/ एकड़ की बचत भी होती है। इस तकनीक से प्रतिकूल मौसम की घटनाओं, जैसे कि सूखा, चक्रवात, बाढ़ इत्यादि के नकारात्मक प्रभाव को कम करने में मदद मिलती है।

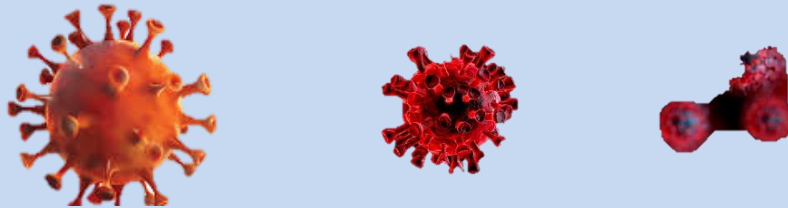


इन-सीटू पटसन सड़न टैंक आधारित आत्मनिर्भर ईको फ़ार्मिंग खेती

- ❖ पटसन सड़न
- ❖ मछली पालन
- ❖ मेड़ पर सब्जी उत्पादन
- ❖ वर्मिकोम्पोस्ट इकाई

- ❖ बत्तख पालन
- ❖ मौन पालन (Apiary)
- ❖ फल उत्पादन (पपीता एवं केला)

IV. कोविड -19 वायरस के प्रसार को रोकने के लिए सुरक्षा के उपाय एवं अन्य आवश्यक कदम



- 1) किसानों को क्षेत्र संचालन की पूरी प्रक्रिया जैसे कि भूमि तैयारी, बुवाई, निराई, सिंचाई आदि में हर कदम पर सामाजिक दूरी बनाना, साबुन से हाथ धोना, चेहरे पर नकाब पहनना, साफ सुथरे कपड़े पहनकर व्यक्तिगत स्वच्छता बनाए रखना, इन सभी सुरक्षा उपायों का पालन करना है।
- 2) पटसन कटाई और जाक को पानी में डालते समय उचित दूरी बनाए रखें एवं चेहरे पर मास्क लगाएँ। इस काम के लिए केवल पहचान वालों को ही काम पर रखें ताकि यथासंभव कोविड - 19 के किसी भी संदिग्ध या संभावित वाहक के प्रवेश से बचा जा सके।
- 3) यदि मशीनों को किसान समूहों द्वारा साझा और उपयोग किया जाता है तो सभी मशीनों जैसे कि सीड ड्रिल, नेल वीडर, सिंचाई पंप, खेत जुताई उपकरण, ट्रैक्टर आदि की उचित स्वच्छता और सफाई बनाए रखें।
- 4) विश्राम के दौरान 3-4 फीट की सुरक्षित दूरी एक दूसरे से बनाए रखें, घर पर ही बीज उपचार, खाद और उर्वरकों की लोडिंग / अनलोडिंग ये सभी काम करें।
- 5) किसी भी संदिग्ध या संभावित वाहक के प्रवेश से बचने के लिए ज्यादा से ज्यादा अपने जान- पहचान वालों से ही क्षेत्र की मोनिटरिंग इत्यादि का काम लें।
- 6) अपने जानने वाली दुकान से ही बीज, उर्वरक, कीटनाशक इत्यादि का खरीद करें और बाजार से लौटने के बाद तुरंत अपने हाथ और शरीर के खुले भागों को अच्छी तरह साबुन से धोयें। बीज खरीदने के लिए बाजार जाते समय हमेशा फेस मास्क का प्रयोग करें।
- 7) आरोग्य सेतु एप्प को इन्स्टाल करें ताकि आप कोविड-19 से संबंधित आवश्यक सेवाओं की जानकारी प्राप्त हो सके।

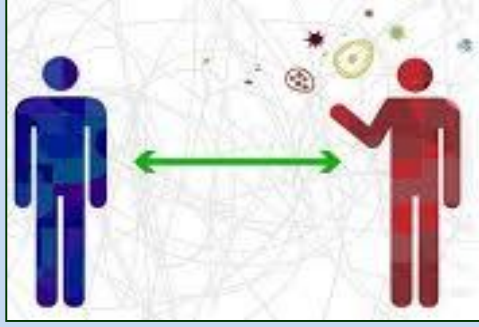


Aarogya Setu

में सुरक्षित | हम सुरक्षित | भारत सुरक्षित



V. जूट मिल श्रमिकों के लिए सलाह



- ❖ मिलों को चलाने के लिए, मिलों के भीतर रहने वाले श्रमिक में से ही छोटे-छोटे अवधि की कई शिफ्टों में लगाया जा सकता है।
- ❖ सामान्य रूप से मिलों के अंदर पर्याप्त संख्या में वाशिंग पॉइंट दिए जाने चाहिए ताकि श्रमिक बार-बार हाथ धो सकें। काम करने के दौरान कार्यकर्ता धूम्रपान न करें।
- ❖ वायरस के संक्रमण को रोकने के लिए अधिक से अधिक बार शौचालय को साफ करना चाहिए।
- ❖ श्रमिकों को यह भी सलाह दी जाती है कि वे मिल में काम करते समय दस्ताने, फेस मास्क, जूते, उचित सुरक्षात्मक कपड़ों का उपयोग करें।
- ❖ मिल के अंदर, कार्य करने वाले क्षेत्रों को बार-बार बदला जाना चाहिए ताकि कर्मियों के बीच सामाजिक दूरी आवश्यकता के अनुसार बनाए रखी जा सके एवं वायरस के संक्रमण को कम से कम जा सके।
- ❖ जो श्रमिक बार-बार काम करने वाली सतहों के संपर्क में आते हैं, वे ज्यादातर समय मशीनों के महत्वपूर्ण भागों को छूते और उन्हें संभालते हैं जैसे स्विच, लीवर आदि उन्हें अपने हाथ की सफाई और साबुन से हाथ धोने में अतिरिक्त सावधानी बरतनी चाहिए। इसके अलावा, इस तरह की सतहों और मशीन के भागों से संक्रमित वायरस को हटाने के लिए साबुन के पानी से साफ किया जाना चाहिए।
- ❖ उच्च जोखिम वाले वृद्ध श्रमिकों को मिल परिसर के अंदर पृथक स्थानों पर काम करने की अनुमति दी जानी चाहिए ताकि दूसरों के संपर्क में आने की संभावना काफी हद तक कम हो जाए।
- ❖ मिल श्रमिकों को टिफिन / दोपहर के भोजन के दौरान इकट्ठा होने से बचना चाहिए, दो व्यक्तियों के बीच कम से कम 6-8 फीट की दूरी बनाए रखनी चाहिए और भोजन लेने से पहले अपने हाथों को अच्छी तरह से धोना चाहिए।
- ❖ कोविड संक्रमण से संबंधित किसी भी प्रकार के लक्षणों के मामले में श्रमिकों को तुरंत डॉक्टर या मिल मालिकों को सूचित करना चाहिए।

आपके स्वस्थ और सुरक्षित होने की कामना करते हैं

डॉ. गौरांग कर
निदेशक

भा.कृ.अ.प. - सी.आर.आई.जे.ए.एफ. (क्रिजैफ)
नीलगंज, बैरकपुर
कोलकाता- 700121, पश्चिम बंगाल
द्वारा संकल्पित एवं प्रकाशित

अभिस्वीकृति: यह संस्थान कृषि परामर्श कमिटी के अध्यक्ष एवं सदस्यों का आभार प्रकट करते हैं। साथ-ही ये फसल उत्पादन, फसल सुधार, फसल संरक्षण के विभागाध्यक्षों एवं ए.आई.एन.पी.एन.एफ और कृषि प्रसार अनुभाग के प्रभारियों का आभार प्रकट करता है। इसके अतिरिक्त, यह संस्थान अपने सभी क्षेत्रीय स्टेशनों के प्रभारी व उनकी टीम, विभिन्न विभागों / अनुभागों के योगदानकर्ता, प्रभारी, ए.के.एम.यू और उनकी टीम का भी आभार प्रकट करता है जिन्होंने इस कृषि सलाह (निर्गत सं. 14/ 2022) को तैयार करने में अपना योगदान दिया है।